



Hargharpanditji

॥ श्री मोक्षदा एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री मोक्षदा एकादशी व्रत कथा ॥

मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की मोक्षदा एकादशी भगवान श्रीहरि विष्णु को अत्यंत प्रिय है। इस एकादशी का वर्णन ब्रह्माण्ड पुराण में मिलता है। यह व्रत पितरों को सद्गति प्रदान करने वाला, समस्त पापों का नाश करने वाला तथा मोक्ष देने वाला माना गया है। इसी दिन श्रीमद्भगवद्गीता जयंती भी मनाई जाती है, क्योंकि महाभारत युद्ध के आरंभ में भगवान श्रीकृष्ण ने इसी तिथि को अर्जुन को गीता का दिव्य उपदेश दिया था।

श्री मोक्षदा एकादशी व्रत कथा

एक समय धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—

"हे जनार्दन! मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? कृपया उसका माहात्म्य और व्रत कथा सुनाइए।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले—

"हे राजन्! यह एकादशी 'मोक्षदा एकादशी' कहलाती है। इसका व्रत करने से पितरों को मोक्ष प्राप्त होता है और साधक को महान पुण्य की प्राप्ति होती है। अब इसकी पावन कथा सुनो।"

प्राचीन समय में गोकुल (कुछ ग्रंथों में चम्पकपुरी) नामक नगरी में वैखानस नाम के एक धर्मात्मा राजा राज्य करते थे। वे न्यायप्रिय, सत्यवादी और प्रजावत्सल थे।

एक रात राजा ने स्वप्न में अपने दिवंगत पिता को अत्यंत कष्ट में देखा।

उनके पिता नरक में दुःख भोग रहे थे। उन्होंने राजा से कहा—

"हे पुत्र! मैं अपने पूर्व जन्म के कर्मों के कारण नरक में कष्ट भोग रहा हूँ। यदि तुम मेरा उद्धार करना चाहते हो, तो कोई ऐसा पुण्य कर्म करो जिससे मुझे मुक्ति प्राप्त हो सके।"

प्रातःकाल राजा अत्यंत दुःखी हुए। उन्होंने अपने पुरोहितों, ब्राह्मणों और

विद्वानों से इस स्वप्न का अर्थ पूछा, परंतु कोई उचित समाधान नहीं बता सका।

तब सभी ने राजा को महान तपस्वी महर्षि पर्वत के आश्रम जाने की सलाह दी।

राजा महर्षि पर्वत के पास पहुँचे, उन्हें प्रणाम किया और अपने स्वप्न की पूरी बात बताई।

महर्षि पर्वत ने ध्यान लगाकर राजा के पिता के पूर्वजन्म का कारण जाना और कहा—

"हे राजन्! तुम्हारे पिता से पूर्व जन्म में एक गंभीर भूल हुई थी, जिसके कारण उन्हें यह कष्ट प्राप्त हुआ है। यदि तुम मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की मोक्षदा एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत करके उसका पुण्य अपने पिता को समर्पित कर दो, तो उन्हें नरक से मुक्ति मिल जाएगी।"

राजा वैखानस ने महर्षि की आज्ञा का पालन किया। उन्होंने विधिपूर्वक मोक्षदा एकादशी का व्रत रखा, भगवान श्रीहरि विष्णु की पूजा की, रात्रि-जागरण किया और द्वादशी के दिन व्रत का समस्त पुण्य अपने पिताश्री को समर्पित कर दिया।

व्रत के पुण्य-प्रभाव से उनके पिता तत्काल नरक के कष्टों से मुक्त होकर दिव्य स्वरूप धारण कर स्वर्गलोक को प्राप्त हुए। उन्होंने आकाश से अपने पुत्र को आशीर्वाद दिया—

"हे पुत्र! तुम्हारे व्रत और भक्ति के पुण्य से मुझे मोक्ष प्राप्त हुआ। भगवान तुम्हारा कल्याण करें।"

यह देखकर सभी ऋषि-मुनि और प्रजाजन अत्यंत प्रसन्न हुए।

भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

"हे धर्मराज! जो श्रद्धा और नियमपूर्वक मोक्षदा एकादशी का व्रत करता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। उसके पितरों को सद्गति प्राप्त होती है और अंत में वह स्वयं भी मेरे परम धाम वैकुण्ठ को प्राप्त करता है।"

मोक्षदा एकादशी का महत्व

यह एकादशी पितरों की शांति और मोक्ष के लिए अत्यंत शुभ मानी जाती है।

इसी दिन श्रीमद्भगवद्गीता जयंती मनाई जाती है।
भगवान श्रीविष्णु, श्रीकृष्ण और गीता का पूजन एवं पाठ विशेष फलदायी माना गया है।

दान, जप, भजन, रात्रि-जागरण तथा ब्राह्मण-सेवा का विशेष महत्व है।
कथा का संदेश

श्रद्धा और भक्ति से किया गया व्रत केवल स्वयं का ही नहीं, बल्कि पितरों का भी कल्याण कर सकता है।

धर्म, सेवा और भगवान विष्णु की उपासना से पापों का नाश होता है।
गीता के उपदेशों का पालन जीवन को धर्ममय और सफल बनाता है।
ईश्वर की कृपा से मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है।

मोक्षदा एकादशी व्रत का फल

जो श्रद्धालु मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की मोक्षदा एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर भगवान श्रीहरि विष्णु की पूजा करता है, गीता का पाठ करता है तथा व्रत का पुण्य पितरों को समर्पित करता है, उसे समस्त पापों से मुक्ति, पितरों की सद्गति, सुख-समृद्धि तथा अंत में भगवान विष्णु के परम धाम वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

॥ श्री विष्णवे नमः ॥

॥ श्री मोक्षदा एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥